कृषि विज्ञान केंद्र रियासी

डॉ. संजय कौशल

ग्रीष्मकालीन मूंग की फसल में कीट प्रबंधन

गर्मियों में, किसान मूंग को एक नकदी फसल के रूप में बुवाई करते हैं।यदि फसल में सही समय पर कीट नियंत्रित न किया जाए, तो फसल के उत्पादन व गुणवत्ता पर गंभीर असर पड़ता है। फसल में कीटों द्वारा होने वाली हानि को केसे प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने के तरीकों पर किसान भाइयो को कृषि विज्ञान केंद्र की सलाह –

मूंग की फसल पर निम्न कीटो (पत्तियों काटने वाले एवं रसचूसक दोनों प्रकार के कीटों) का प्रकोप होता जो फसल को क्षति पहुचाते है–

सफेद मक्खी – इसका प्रकोप पौधे के एक पत्ती अवस्था से ही प्रारम्भ हो जाता है। जो कि फसल की हरी अवस्था तक प्रकोप करता रहता है। शिशु एवं वयस्क पौधे से रस चूसते है। गंभीर प्रकोप में पत्तियां मुड जाती हैं। यह मक्खी पीले मोजेक वायरस रोग के प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

माहू– निम्फ और वयस्कों का रंग काला होता है। शुरुआत में उनकी संख्या कम होती है, ले. किन मादा सीधे बच्चों को जन्म देती है, जिसके कारण उनकी संख्या बढ़ जाती है। माहू युवा शाखाओं, पत्तियों और फलियों में चिपके हुए दिखाई देते हैं। निम्फ और वयस्क कीट युवा तनों से रस चूसते है, जिसके परिणामस्वरूप पौधे की वृद्धि में रुकावट आती है। अधिक संक्रमण में, पौधे के ऊपरी भाग और उसकी फली मुड जाते है और उत्पादन और गुणवत्ता पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

एकीकृत प्रबंधन

- पीला विषाणु रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर जला दें।
- पीले चिपचिपे ट्रेप का उपयोग करे चाहे तो इन्हें घर पर भी बना सकते है तीन की प्लेट या चादर में पीले रंग का पेंट करके उसमे ग्रीस या सरसों का तेल लगाकर उपयोग कर सकते है इन्हें प्रति एकड़ 20 से 25 ट्रेप उपयोग किये जा सकते है
- बोनी के पहले बीज को थायोमेथाक्सम 70 डब्ल्यू.एस. 4 ग्राम/कि.ग्रा. या इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एस. एल. 5 मि.ली./कि.ग्रा. की दर से बीजोपचार कर बोनी करें।
- फसल पर कीट का आक्रमण होने पर निम्नलिखित कोई एक कीटनाशक दवा का छिड़काव करें। या एसिटामिप्रिड 20 एस. पी. 50 ग्राम या थायमेथेक्जेम 25 डब्ल्यू.जी. 100 ग्राम या

हरी अर्द्धकुण्डलाकार इल्ली –

कीट की इल्ली अवस्था फसल की पत्तियाँ खाकर नुकसान पहुंचाती है। जिससे पत्तियों पर छोटे–छोटे छिद्र बनते है। छोटी इल्ली द्वारा पत्तियों में छोटे–छोटे छेद बनाकर खाती है जबकि बड़ी इल्लियों पत्तियों पर बड़े एवं अनियमित छेद करती है। अधिक प्रकोप अवस्था में फसल की पत्तियों के केवल शिराएं बची रह जाती है।

तम्बाकू की इल्ली –

कीट की नवजात इल्लियाँ समूह में रहकर पत्तियों का पर्ण हरित खुरचकर खाती है, जिससे ग्रसित पत्तियाँ जालीदार हो जाती है जो कि दूर से ही देख कर पहचानी जा सकती है। पूर्ण विकसित इल्ली पत्ती, कली एवं फली तक को नुकसान करती है।

बिहार कम्बलिया कीट –

पनवजात इल्लियाँ अंड–गुच्छों से निकलकर एक ही पत्ती पर झुण्ड में रह कर पर्ण हरित खुरच कर खाती है। नवजात इल्लियाँ 5–7 दिनों तक झुण्ड में रहने के पश्चात पहले उसी पौधे पर एवं बाद में अन्य पौधों पर फैल कर पूर्ण पत्तियाँ खाती है। जिससे पत्तियाँ पूर्णतरू पर्ण विहीन जालीनुमा हो जाती है।

फल्ली छेदक –

नवजात इल्लियाँ कली, फूल एवं फल्लियों को खाकर नष्ट करती है पर फल्लियों में दाने पड़ने के पश्चात इल्लियाँ फल्ली में छेद कर दाने खाकर आर्थिक रूप से हानि पहुंचाती है।

एकीकृत प्रबंधन

- फिरोमोन ट्रेप 10–12/हे. लगाकर कीट प्रकोप का आंकलन एवं उनकी संख्या कम करें। अंडे व इल्लियों के समूह को इक्कठा कर नष्ट कर दें।
- 40–50/हे. खूंटियां (3–5 फीट ऊँची) पक्षियों के बैठने हेतु फसल की शुरुआत से ही लगाये। जिन पर पक्षी बैठ कर इल्लियाँ खा सके।
- जैविक कीटनाशक बोवेरिया बेसियाना 400 मि.ली./एकड़ का उपयोग करे
- रासायनिक कीटनाशको में एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. 100 ग्रा. या स्पाईनोसेड 45 एस. सी. 70 मि.ली.या इंडोक्साकार्ब 14.8 एस. एल. 200 मि.ली./एकड़ के हिसाब से उपयोग करें।

भाकृअनुप
ICAR

प्रकाशक निदेशक विस्तार

अधिक जानकारी के लिए

के वी के रियासी से संपर्क करें

डॉ. संजय कौशल

शेर–ए–कश्मीर कृषि, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू

या टोल फ्री नंबर पर कॉल करें

1800–180–1551